

हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन की समस्याएँ

रोक्सी

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
बाबू अनंत राम जनता महाविद्यालय
कौल (कैथल)

सारांश :

मनुष्य अपने जीवन काल में चार सोपानों से होकर गुजरता है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था आदि। इस जीवन रूपी यात्रा के अंतिम पड़ाव को वृद्धावस्था कहा जाता है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है – पका हुआ या परिपक्व। प्राचीन काल से अब तक हमारे साहित्य में कभी दलित विमर्श, कभी स्त्री विमर्श तो कभी किसान विमर्श के बारे में लिखा गया है। परन्तु आज के इस युग में जो सबसे बड़ी समस्या है वह है – वृद्धों की समस्या। हमारी भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों को ज्ञान का भंडार कहा जाता था। उनका आदर सत्कार किया जाता था। परन्तु अब औद्योगिकीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हमारे मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। आज के युग में वृद्धों को बोझ माना जाने लगा है। उन्हें घर से बाहर निकालकर, वृद्धाश्रमों में रहने के लिए मजबूर किया जा रहा है। एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, पुत्र विवाह के पश्चात् अपने माता-पिता से अलग रहना पसंद करते हैं।

आज की इस पीढ़ी में पिता-पुत्र के संबंध के बीच स्थापित मर्यादा नष्ट हो चुकी है। पुत्र पिता के सामने अनैतिक कार्यों को करते हुए नहीं डरते। अतः इस शोध पत्र के माध्यम से वृद्धों की वर्तमान स्थिति और उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास किया जाएगा।

मुख्य शब्द – परिपक्व, वृद्धावस्था, संस्कृति, वृद्धाश्रम, मर्यादा।

भारतीय परम्परा में वृद्धों का आदर-सत्कार किया जाता है और कहा जाता है कि जो व्यक्ति नित्य बुजुर्गों को प्रणाम करता है और उनकी सेवा करता है उनकी आयु, यश और विद्या में वृद्धि होती है। जो अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करते हैं उनको किसी मंदिर या तीर्थ स्थान पर जाने की जरूरत नहीं होती। परन्तु वर्तमान युग में हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो चुका है। युवाओं व बुजुर्गों में तालमेल स्थापित न होने के कारण बुजुर्गों को आर्थिक परेशानी, मानसिक तनाव, अस्वस्थता, भय, असुरक्षा, परिवार से अलगाव आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से बुजुर्गों की स्थिति को समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया। उषा प्रियम्वदा की 'वापसी' कहानी में गजाधर बाबू की, उसकी पत्नी व उसके बच्चों द्वारा किए गए उपेक्षित व्यवहार के कारण उत्पन्न मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है। पैंतीस साल तक रेलवे में नौकरी करने के बाद गजाधर बाबू खुश हैं कि अब वो अपने परिवार के साथ रहेंगे क्योंकि इन वर्षों में ज्यादा समय उन्होंने अकेले रहकर बिताया था। परंतु घर पहुँचने पर परिवार द्वारा किए गए उपेक्षित व्यवहार के कारण उनको मानसिक आघात पहुँचता है। उनकी चारपाई को स्टोर रूम जैसी कोठरी में डाल दिया जाता है। "पत्नी की कोठरी में झांका तो अचार, रजाइयों और कनस्तारों के मध्य अपनी चारपाई लगी पायी। गजाधर बाबू ने कोट उतारा और कहीं टाँगने को दीवार पर नजर दौड़ायी। फिर उसे मोड़कर अलगनी के कुछ कपड़े खिसकाकर, एक किनारे टांग दिया।"¹

गजाधर बाबू जब घर में अनुशासन बनाए रखने के लिए बेटी बसंती को देर रात तक उसकी सहेली शीला के घर पर रहने, नरेन्द्र का पढ़ाई में मन न लगाने पर टोकना, अमर की फिजूलखर्ची, बहू और बेटी को रसाई के काम में हाथ बंटाने को कहते हैं तो बच्चे सुधरने की बजाय रुठ कर बैठ जाते हैं। जब गजाधर बाबू अनावश्यक खर्च को देखते हुए नौकर को हटा देते हैं तो सभी इसे अपनी निजी स्वतन्त्रता में बाधा मानते हैं जिससे घर में उनके घटते वर्चस्व का पता चलता है। पत्नी अर्धांगिनी होती है। पति और पत्नी दोनों एक दूसरे के साथ अपने सुख-दुख को साझा करते हैं। परन्तु सबसे ज्यादा आहत उसे (गजाधर बाबू) तब पहुँचती है जब उसकी पत्नी भी उसे नहीं समझती। उनकी पत्नी और बच्चों के लिए वह केवल धनोपार्जन के साधन बन चुके थे। "जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है। उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उनकी सम्पूर्ण दुनिया बन गयी है।"²

"वृद्धावस्था के अंतर्गत आधुनिकता के साथ तारतम्यता न बिठा पाने के कारण वृद्धों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आना स्वाभाविक है। इस चिड़चिड़ेपन के कारण अगर कोई बुजुर्ग परिवार की कार्यप्रणाली के साथ सामंजस्य नहीं स्थापित कर पाता तो उसे इस कृत्य हेतु उपेक्षा, अवहेलना और उलाहना प्राप्त होता है।"³

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यासों में जीवन के विभिन्न आयामों को चित्रित किया है। 'समय-सरगम' उपन्यास में उन्होंने वृद्ध जीवन पर प्रकाश डाला है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुके लोगों के अकेलेपन, मानसिक तनाव, अन्तर्द्वंद्व और मृत्युमय जैसी कई समस्याओं पर चिंतन व्यक्त किया है। दमयंती, प्रभुदयाल और कामिनी के माध्यम से लेखिका ने वृद्धों की समस्याओं को उजागर किया है और उपन्यास के प्रमुख पात्र आरण्या और ईशान के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि वृद्धावस्था में भी स्वाभिमान से जिया जा सकता है। इन्होंने बुढ़ापे को ढलता सूरज न मानकर बल्कि उस अनुभव के रूप में दिखाया है जो उगते सूरज को रास्ता दिखाता है। सोबती जी वृद्धों को यह संदेश देती हैं कि समय और प्रकृति तो नित नवीन है, फिर हमें वृद्धावस्था को अपने परिवेश पर लादना नहीं चाहिए। "समय तो हमारे बाहर भी है और आगे भी। वही है जो हमें आतंकित करता है। पर इस समय ऐसे बरसाती दिन में यह दुविधा क्यों और नर्मालाप भी क्यों। आगे बढ़कर क्षण को पकड़ लो जो तुम्हारा है। यह शाम, यह क्षण, यह बारिश लपककर हथेली में समेट लो। एक बार चुकी तो हमेशा के लिए खिसक जाएगी।"⁴ वर्तमान युग में युवा पीढ़ी अपने संस्कारों को भूल रही है और दिखावे के प्रति ज्यादा आकर्षित है। वे माता-पिता का सहारा बनने के बजाय, उनको मार्ग में बाधा मानते हैं। 'समय-सरगम' की पात्र दमयंती की तरह ही, आज कई बुजुर्ग अपने ही बच्चों की उपेक्षा का

शिकार है। आज का युवावर्ग अपने बुजुर्गों के खान-पान, स्वास्थ्य आदि को भी अनदेखा करता है। दमयंती कहती हैं – आरण्या में बहुत दुःखी हूँ।मैं अपने बच्चों से वैर-विरोध क्यों करूँगी। उनका भी कोई फर्ज बनता है। मैंने कुछ खाया-पिया है कि नहीं – बीमार हूँ – दवा लानी है, टेस्ट करवाना है – डॉक्टर के पास जाना है – वह सब मैं अपने आप ही करूँ।”⁵

दमयंती विधवा बुजुर्ग हैं। केवल वह ही नहीं है जो अपने बच्चों के दुर्व्यवहार का शिकार है। इस उपन्यास का अन्य पात्र प्रभुदयाल भी इस पीड़ा को झेल रहा है। प्रभुदयाल विधुर है। “उसके बहू, बेटे परेशान हैं कि पता नहीं पिता जी ने खजाने में क्या-क्या छिपाकर रखा है। लड़के ने सूत में पिरोई ताली गले पर से उतार ली। बाप का इससे बड़ा अपमान भी क्या हो सकता है।”⁶

परिवार के तिरस्कार, अनादर और उदासीनता से तंग आकर वे अपनी गृहस्थी दोबारा बसाना चाहते हैं। परन्तु नियति ने उसे एक रहस्यमयी मौत की नींद सुला दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उनकी मृत्यु गला घोटने से हुई। सोचनीय बिंदु यह है कि आज के समय में वो बुजुर्ग भी असुरक्षित है, जिनके पास पैसा है।

“प्राचीन होकर भी समीचीन महाकाव्य महाभारत में श्लोक हैं – माता गुरुतरा भूमे :; पिता उच्चतरश्च खात् अर्थात् माता रत्नगर्भा भूमि से महान और पिता असीम आकाश से भी ऊँचे हैं किन्तु आधुनिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत माता और पिता को वृद्धावस्था में तृणवत मान्यता भी प्राप्त नहीं है।”⁷

जो माता-पिता अपने बच्चों को सुख-सुविधाएँ प्रदान करने के लिए स्वयं कष्ट उठाते हैं, उन्हीं बच्चों के घर में अपने माता-पिता के लिए रहने का स्थान नहीं रहता। गजाधर बाबू को कोठरी में रहने के लिए विवश किया जाता है। दमयंती ड्राइंग रूम में नहीं बैठ सकती। वह आरण्या और ईशान से कहती हैं – “मैं वहाँ नहीं बैठ सकती, मेरे मेहमान नहीं बैठ सकते जबकि वहाँ का सब फर्नीचर, साज-सामान मेरा अपना बनाया हुआ है। और मैं किसी बेजान काठ की तरह देखी जाती हूँ।”⁸

वृद्धावस्था में वृद्धों का दिमाग बच्चों जैसा हो जाता है। छोटी-छोटी बातों पर चिड़चिड़े हो जाते हैं। मां-बाप बच्चों के लिए बोझ बन गए हैं। एक बेटा अपनी वृद्ध माता को नदी में धक्का दे देता है क्योंकि उसके पास अपनी माँ के लिए दो वक्त की रोटी भी नहीं है। एक और घटना है, जिससे एक बेटा अपनी वृद्ध माँ को तीर्थस्थान के बहाने लेकर जाता है और वहाँ छोड़कर आ जाता है। सिर्फ ये ही घटनाएँ नहीं हैं और भी ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें सुनकर हृदय द्रवित हो उठता है।

एक सर्वे के मुताबिक, भारत में ऐसे वृद्धों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है जो आर्थिक, मानसिक व शारीरिक रूप से परेशान हैं। सरकार ऐसे वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम बनाती है ताकि उन्हें भरपेट खाना मिल सके। इन वृद्धाश्रमों में उन्हें भरपेट खाना तो मिल जाता है परन्तु बुढ़ापे में जिस भावनात्मक सहारे की आवश्यकता होती है, वो नहीं मिल पाता।

बुजुर्गों के सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए सरकार ने कई तरह के नियम बनाए हैं। जिनमें एक कानून है ‘माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण कानून 2007 (MWPS)’। यह कानून उन वृद्धों की मदद के लिए बनाया गया है, जो अपने बच्चों से परेशान हैं। इसके अंतर्गत बच्चों को अपने माता-पिता की देखभाल करना, उनकी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरी करना अनिवार्य है।

इस कानून के अनुसार अगर वृद्ध अपनी संपत्ति को अपने बच्चों या रिश्तेदार के नाम कर चुका हो और वो बच्चे/रिश्तेदार उनकी देख-रेख नहीं कर रहे हैं तो जो संपत्ति बुजुर्ग ने उनके नाम की थी, वो रद्द मानी जाएगी। और वह फिर से वृद्ध के नाम हो जाएगी। अगर वृद्ध चाहे तो अपने बच्चों को अपनी संपत्ति से वंचित कर सकता है। इसके अतिरिक्त वृद्धों को पेंशन भी दी जाती है, जो उनको आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आयुष्मान भारत नामक योजना चली हुई है जिसके अंतर्गत वृद्धों को प्रतिवर्ष अस्पतालों में 5 लाख तक का मुफ्त इलाज मिल सकता है। हम इन योजनाओं के द्वारा बुजुर्गों को आर्थिक सहायता तो पहुँचा सकते हैं पर इनकी मानसिक पीड़ा को शांत नहीं कर सकते। इसके लिए चाहिए कि बच्चों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए। उन्हें सिखाएं कि वृद्धों को बोझ नहीं समझना चाहिए। यह उम्र का वह पड़ाव है जिससे सभी को गुजरना पड़ता है। कल हमें भी बूढ़ा होना है। बुजुर्ग अड़ियल स्वभाव के हो जाते हैं। बच्चों को चाहिए कि उनके साथ बराबरी न करें नहीं तो यह जंग रिश्तों में खटास पैदा कर देती है। हाँ, वृद्धों को भी चाहिए कि वो भी बच्चों की हर बात पर टोका-टाकी न करें। अतः वृद्धों और युवा पीढ़ी के सामंजस्य से ही इस बढ़ती हुई समस्या को खत्म किया जा सकता है।

“दिनेश दिग्गज” ने युवा पीढ़ी के नाम अपना संदेश देते हुए लिखा है –

“बहुत सेल्फी लेते हो, जरा मुस्कुराया करो,
अपने चेहरे को आईना भी दिखाया करो,
अरे जमाने के तजुर्बे गूगल पर नहीं मिलेंगे,
मिले जो वक्त, बुजुर्गों के पास बैठ जाया करो।”⁹

संदर्भ सूची :

1. प्रियम्बदा, उषा, *वापसी, जिन्दगी और गुलाब के फूल*, (कहानी संग्रह), नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन ग्रुप, पृ. 102
2. प्रियम्बदा, उषा, *वापसी, जिन्दगी और गुलाब के फूल*, (कहानी संग्रह), नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन ग्रुप, पृ. 103
3. तिवारी, सुधांशु कुमार, *वृद्धावस्था का आधुनिक यथार्थ : चार दरवेश*, शोध दिशा, बिजनौर, हिंदी साहित्य निकेतन, पृ. 82
4. सोबती, कृष्णा, *समय सरगम*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पांचवा संस्करण, 2024, पृ. 20
5. वही, पृ. 91
6. सोबती, कृष्णा, *समय सरगम*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पांचवा संस्करण, 2024, पृ. 133
7. तिवारी, सुधांशु कुमार, *वृद्धावस्था का आधुनिक यथार्थ : चार दरवेश*, शोध दिशा, बिजनौर, हिंदी साहित्य निकेतन, पृ. 82
8. सोबती, कृष्णा, *समय सरगम*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पांचवा संस्करण, 2024, पृ. 92
9. वाजपेयी, शालिनी, *भारत में बुजुर्गों की स्थिति, समस्याएँ और समाधान*, दृष्टि आईएस ब्लॉग, 2023